निशीथसूत्र (फोल्डर नं. ००१२५०)

मुख्य टाईटल
समर्पण
प्रकाशकीय
अप्रकाश्यों का प्रकाशन
प्राक्कथन
निशीथसूत्र : एक समीक्षात्मक अध्ययन
विषयसूची
प्रायश्चित्त तालिका ---------- १
उद्देशक १
वेदमोहदय-प्रायश्चित्त ---------- ३
२-९. अंगादान संचालन आदि प्रायश्चित्त ---------- ८
१०. फूल आदि सचित्त पदार्थ सूंघने का प्रायश्चित्त ---------- १२
११-१४. गृहस्थ द्वारा पदमार्ग आदि बनवाने का प्रायश्चित्त ---------- १३
१५-१८. सूई आदि के सुधार-संस्कार कराने का प्रायश्चित्त ---------- १४-१७
१०-२२. सूई आदि के निष्प्रयोजन लाने का प्रायश्चित्त ---------- १७
२३-२६. सूई आदि अविधि से लेने का प्रायश्चित्त ---------- १८
२७-३०. सूई आदि से अनिर्दिष्ट कार्य करने का प्रायश्चित्त ---------- १८
३१-३४. सूई आदि अन्य को देने का प्रायश्चित्त ---------- १९
३५-३८. सूई आदि अविधि से लौटने का प्रायश्चित्त ---------- २०
३०. पात्र सुधारने का प्रायश्चित्त ---------- २०
४१. दंड आदि सुधरवाने का प्रायश्चित्त ---------- २१
४१-४६. पात्र सीने जोड़ने का प्रायश्चित्त ---------- २२-२४
४७-५६. वस्त्र सीने जोडने का प्रायश्चित्त ---------- २४-२७
५७. गृहस्थ सं धूंआ उतरवाने का प्रायश्चित्त ---------- २७
५८. पूतिकर्म दोष का प्रायश्चित्त ---------- २८
उद्देशक का सूत्र क्रमांक युक्त सारांश ---------- २९
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है अथवा नहीं है ---------- ३०
उद्देशक २
१-८. दंडयुक्त पादप्रोंछन सम्बन्धी प्रायश्चित्त ---------- ३१
९. इत्रादि सूंघने का प्रायश्चित्त ---------- ३५
१०-१३. पदमार्ग आदि स्वयं बनाने का प्रायश्चित्त ---------- ३५
१४-१७. सूई आदि को स्वयं सुधारने का प्रायश्चित्त ---------- ३६
१८. अल्पतम कठोर भाषा बोलने का प्रायश्चित्त ---------- ३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. अल्पतम झूठ बोलने का प्रायश्चित्त-- ३७
२०. अल्प अदत्त लेने का प्रायश्चित्त-- ३८
२१. अंगोपांग प्रक्षालन का प्रायश्चित्त -- ३८
२२. अखण्ड चर्म रखने का प्रायश्चित्त -- ३९
२३. बहुमूल्य वस्त्र रखने का प्रायश्चित्त-- ४०
२४. अभिन्न वस्त्र रखने का प्रायश्चित्त -- ४१
२५-२६. पात्र, दण्ड आदि के सुधार कार्य स्वयं करने का प्रायश्चित्त------------------------------------ ४१
२७-३१. अन्य की गवेषणा के पात्र लेने का प्रायश्चित्त-- ४२
३२. निमन्त्रित पिंड ग्रहण करने का प्रायश्चित्त--- ४३
३३-३६. दानपिंड ग्रहण करने का प्रायश्चित्त--- ४३-४५
३७. नित्य निवास का प्रायश्चित्त-- ४६
३८. दाता की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त -- ४६-४७
३९. अनुरागी कुलों में दुबारा भिक्षार्थ जाने का प्रायश्चित्त--- ४७
४०-४२. अन्य भिक्षातरों के साथ गमनागमन का प्रायश्चित्त --- ४८
४३. मनोज्ञ जल पीने और अमनोज्ञ परठने का प्रायश्चित्त--- ४९
४४. मनोज्ञ भोजन खाने, अमनोज्ञ परठने का प्रायश्चित्त -- ५०
४५. अधिक आहार अन्य श्रमणों को बिना पूछे परठने का प्रायश्चित्त ------------------------------- ५१
४६-४७. शय्यातर पिंड सम्बन्धी प्रायश्चित्त-- ५२-५३
४८. शय्यातर का घर जाने बिना गोचरी जाने का प्रायश्चित्त------------------------------------- ५३-५४
४९. शय्या की सक्रिय दलाली से हार लेने का प्रायश्चित्त --- ५४
५०-५१. शय्यातर संस्तारक के याचना काल के अतिक्रमण का प्रायश्चित्त ------------------------- ५५-५६
५२. वर्षा से भीगते पाट आदि को न हटाने का प्रायश्चित्त-- ५६
५३. शय्या-संस्तारक मालिक की बिना आज्ञा अन्यत्र ले जाने का प्रायश्चित्त ----------------------- ५७
५४-५५. शय्या-संस्तारक विधिवत् न लौटाने का प्रायश्चित्त-- ५८
५६. खोये गये शय्या-संस्तारक की खोज नहीं करने पर प्रायश्चित्त ---------------------------------- ५८
५७. प्रतिलेखन नहीं करने का प्रायश्चित्त -- ५९-६०
उद्देशक का सूत्र क्रमांक युक्त सारांश -- ६०-६१
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है अथवा नहीं है-- ६२
उद्देशक ३
१-१२. अविधि के आहार की याचना करने का प्रायश्चित्त -- ६३-६६
१३. गृहस्थ के मना करने के बाद भी उनके घर गोचरी जाने का प्रायश्चित्त----------------------- ६६
१४. बड़े जीमनवार में भिक्षार्थ जाने का प्रायश्चित्त-- ६७
१५. अभिहड दोष सेवन का प्रायश्चित्त-- ६७
१६-२१. पात्र परिकर्म का प्रायश्चित्त -- ६८
२२-२७. शरीर परिकर्म का प्रायश्चित्त-- ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८-३३. व्रण चिकित्सा का प्रायश्चित्त -- ७०
३४-३९. घूमडे आदि की शल्य-चिकित्सा का प्रायश्चित्त -- ७०
४०. अपानद्वार से कृमियां निकालने का प्रायश्चित्त -- ७५-७६
४१. नख काटने का प्रायश्चित्त--- ७६
४२-४७. दाढी मूंछ एवं कांख आदि के रोम काटने का प्रायश्चित्त-------------------------------------- ७७
४८-५०. दंतमंजन आदि करने का प्रायश्चित्त-- ७७
५१-५६. ओष्ठ परिकर्म का प्रायश्चित्त -- ७९
५७-६३. चक्षु परिकर्म का प्रायश्चित्त-- ७९
६४-६६. मस्तक आदि के केश काटने का प्रायश्चित --- ८०
६७. शरीर से पसीना-मैल हटाने का प्रायश्चित्त --- ८२
६८. आंख, कान, नाक और नख का मैल निकालने का प्रायश्चित्त----------------------------------- ८२
६९. मस्तक ढांक कर कहीं भी जाने का प्रायश्चित्त-- ८३
७०. वशीकरण करने का प्रायश्चित्त -- ८६
७१-७९. अकल्पनीय स्थानों में मल-मूत्र परठने का प्रायश्चित्त ------------------------------------ ८७
८०. धूप न आने वाले स्थान में मल-विसर्जन करने का प्रायश्चित्त ------------------------------ ९०
उद्देशक का सूत्र क्रमांक युक्त सारांश --- ९२
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है अथवा नहीं है--------------------------------------- ९३
उद्देशक ४
१-५. राजा आदि को वश करने का प्रायश्चित्त--- ९५
६-१०. राजा आदि की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त-- ९६
११-१५. राजा आदि को आकर्षित करने का प्रायश्चित्त-- ९७
१६-३०. ग्राम-रक्षक आदि को वश में करने आदि का प्रायश्चित्त---------------------------------- ९८
३१. सचित्त धान्य या बीज आदि खाने का प्रायश्चित्त --१००
३२. गुरु आदि की आज्ञा बिना विगय खाने का प्रायश्चित्त--१०१
३३. स्थविरों द्वारा स्थापित कुलों को जाने बिना गोचरी जाने का प्रायश्चित्त-------------------------१०३
३४. साध्वी के उपाश्रय में अविधि से जाने का प्रायश्चित्त--१०४
३५. साध्वी के आने के मार्ग में उपकरण रखने का प्रायश्चित्त ------------------------------------१०४
३६. नया कलह करने का प्रायश्चित्त--१०५
३७. उपशांत कलह को उभारने का प्रायश्चित्त---१०५
३८. मुंह फाड कर या आवाज करते हुए हंसने का प्रायश्चित्त------------------------------------१०६
३९-४८. पार्श्वस्थ आदि को साधु देने या उनसे लेने का प्रायश्चित्त ----------------------------------१०६
४९-६२,६३. सचित पदार्थों से लिप्त (खरडे) हाथादि से आहार लेने का एवं बिना खरडे हाथ आदि से आहार लेने का प्रायश्चित्त ---११२
६४-११७. साधुओं द्वारा परस्पर शरीरपरिकर्म करने का प्रायश्चित्त-----------------------------------११६
११८-१२७. मल-विसर्जन सम्बन्धी विधि भंग करने का प्रायश्चित्त-----------------------------------११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२८. प्रायश्चित्त वहन करने वाले के साथ भिक्षार्थ जाने का प्रायश्चित्त------------------------------१२१
उद्देशक का सूत्र क्रमांक युक्त सारांश --१२४
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है अथवा नहीं है--------------------------------------१२६
उद्देशक ५
१-११. वृक्षस्कंध के निकट बैठने आदि का प्रायश्चित्त --१२८
१२. गृहस्थ से चद्दन सिलवाने का प्रायश्चित्त---१२९
१३. चादर से लम्बी डोरियां बांधने का प्रायश्चित्त --१२९
१४. पत्ते धोकर खाने का प्रायश्चित्त ---१३०
१५-१८. लौटाने योग्य पादप्रोंछन सम्बन्धी प्रायश्चित्त ---१३०
२३. लौटाने योग्य शय्या-संस्तारक सम्बन्धी प्रायश्चित्त --१३२
२४. सूत कातने का प्रायश्चित्त---१३२
२५-३०. सचित्त, रंगीन या आकर्षक दंड बनाने का प्रायश्चित्त---------------------------------------१३३
३१. नवनिर्मित ग्राम, उपनगर आदि में प्रवेश करने का प्रायश्चित्त--------------------------------१३५
३२. नवनिर्मित खान में प्रवेश करने का प्रायश्चित्त --१३६
३३-३५. वीणा बनाने एवं बजाने का प्रायश्चित्त ---१३७
३६-३८. दोष वाली शय्या में प्रवेश करने का प्रायश्चित्त ---१३८
३९. संभोग-प्रत्ययिक-क्रिया नहीं मानने का प्रायश्चित्त--१४४
४०-४२. उपधि परठने के अविवेक का प्रायश्चित्त ---१४४
४३-५२. रजोहरण सम्बन्धी विधि-विधान भंग करने के प्रायश्चित्त-------------------------------१४६
उद्देशक का सूत्र क्रमांक युक्त सारांश --१५०
उपसंहार---१५०
उद्देशक ६
१-७८. अब्रह्म के संकल्प से किए जाने वाले कृत्यों के प्रायश्चित्त--------------------------------१५२
उद्देशक का सूत्र क्रमाकं युक्त सारांश --१५७
उद्देशक ७
१-३. मैथुनसंकल्प से माला बनाने पहनने का प्रायश्चित्त--१५८
४-६. कडा बनाने पहनने का प्रायश्चित्त--१५९
७-९. आभूषण बनाने का प्रायश्चित्त---१६०
१०-१२. विविध वस्त्र निर्माण एवं उपयोग का प्रायश्चित्त---१६१
१३. अंगों के संचालन का प्रायश्चित्त---१६३
१४-६७. शरीर परिकर्म के ५४ प्रायश्चित्त---१६३
६८-७५. सचित्त पृथ्वी आदि पर बैठने बैठाने का प्रायश्चित्त --------------------------------------१६३
७६-७७. गोद में बैठाने आदि का प्रायश्चित्त ---१६५
७८-७९. धर्मशाला आदि स्थानों में बैठने आदि का प्रायश्चित्त-----------------------------------१६५
८०. चिकित्सा करने का प्रायश्चित्त--१६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८१-८२. मनोज्ञ पुद्गल प्रक्षेपण आदि का प्रायश्चित -- १६६
८३-८५. पशु-पक्षियों के अंगसंचालनादि का प्रायश्चित -- १६७
८६-८९. आहार-पानी लेने देने का प्रायश्चित्त -- १६८
९०-९१. वाचना लेने देने का प्रायश्चित्त -- १६८
९२. विकारवर्धक आकार बनाने का प्रायश्चित्त -- १६९
उद्देशक का सूत्र क्रमांक युक्त सारांश -- १६९
उपसंहार -- १६९
उद्देशक ८
१-९. अकेली स्त्री के साथ संपर्क करने का प्रायश्चित -- १७१
१०. रात्रि में स्त्री परिषद में अपरिमित कथा करने का प्रायश्चित्त -- १७४
११. निर्ग्रन्थी से अतिसंपर्क का प्रायश्चित -- १७५
१२. उपाश्रय में रात्रि के समय स्त्रीनिवास का प्रायश्चित -- १७६
१३. स्त्री के साथ रात्रि में गमनागमन का प्रायश्चित -- १७७
१४-१८. मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं के महोत्सव आदि स्थलों से आहार लेने का प्रायश्चित -- १७७
उद्देशक का सूत्रक्रमांक युक्त सारांश -- १८०
उपसंहार-उद्देशक का विषय अन्य आगमों में है या नहीं? -- १८०
उद्देशक ९
१-२. राजपिंड ग्रहण करने का प्रायश्चित -- १८२
३-५. राजा के अंतःपुर में प्रवेश एवं भिक्षाग्रहण सम्बन्धी प्रायश्चित -- १८२
६. राजा का दानपिंड ग्रहण करने का प्रायश्चित -- १८३
७. राजा के कोठार आदि को जाने बिना गोचरी जाने का प्रायश्चित्त -- १८४
८-९. राजा या रानी को देखने के लिए जाने का प्रायश्चित -- १८५
१०. शिकार के लिए गये राजा से आहार लेने का प्रायश्चित -- १८६
१२. राजा के उपनिवासस्थान के निकट में ठहरने का प्रायश्चित्त -- १८७
१३-१८. यात्रा में गये राजा का आहार लेने का प्रायश्चित -- १८८
१९. राज्याभिषेक के समय गमनागमन का प्रायश्चित -- १८९
२०. किसी भी राजधानी में बारंबार जाने का प्रायश्चित्त -- १८९
२१-२७. राजकर्मचारी के निमित्त बना आहार लेने का प्रायश्चित -- १९०
उद्देशक का सूत्रक्रमांक युक्त सारांश -- १९४
उपसंहार-अन्य आगमों में उक्त-अनुक्त विषय -- १९५
उद्देशक १०
१-४. आचार्य गुरु आदि की अविनय आशातना का प्रायश्चित -- १९६
५. अनंतकाय संयुक्त आहार करने का प्रायश्चित्त -- १९८
६. आधाकर्मी दोष के सेवन का प्रायश्चित -- १९९
७-८. गृहस्थ को निमित्त बताने का प्रायश्चित्त -- २००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९-१०. दीक्षित शिष्य के अपहरण का प्रायश्चित--२०२
११-१२. दीक्षार्थी के अपहरण करने का प्रायश्चित --२०२
१३. अज्ञात आगंतुक भिक्षु को कारण जाने बिना रखने का प्रायश्चित --------------------------------२०३
१४. कलह करके आये भिक्षु के साथ आहार-संभोग करने का प्रायश्चित ----------------------------२०४
१५-१८. विपरीत प्रायश्चित कहने एवं देने का प्रायश्चित --२०४
१९-२४. प्रायश्चित्तयोग्य भिक्षु के साथ आहार करने का प्रायश्चित --------------------------------------२०५
२५-२८. रात्रिभोजन दोष सम्बन्धी प्रायश्चित्त--२०६
२९. रात्रि में आहार-पानी के उद्गाल को निगलने का प्रायश्चित --२०९
३०-३३. ग्लान की सेवा में प्रमाद करने का प्रायश्चित्त--२०९
३४-३५. चातुर्मास में विहार करने का प्रायश्चित---२१०
३६-३७. पर्यूषण निश्चित्त दिन न करने का प्रायश्चित --२१२
३८-३९. पर्यूषण के दिन बाल रखने और आहार करने का प्रायश्चित ---------------------------------२१४
४०. पर्यूषणा-कल्प गृहस्थ को सुनाने का प्रायश्चित्त ---२१५
४१. चौमासे में वस्त्र लेने का प्रायश्चित ---२१६
उद्देशक का सूत्रक्रमांक युक्त सारांश--२१६
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है या नहीं --२१७

उद्देशक ११

१-४. निषिद्ध पात्र लेने रखने का प्रायश्चित --२१९
५-६. पात्र के लिए क्षेत्र सीमा उल्लंघन का प्रायश्चित ---२२२
७. धर्म की निन्दा करने का प्रायश्चित्त--२२३
८. अधर्म की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त ---२२३
९-६२. गृहस्थ के शरीर सम्बन्धी सेवा शुश्रूषा करने का प्रायश्चित---------------------------------------२२४
६३-६४. भयभीत करने का प्रायश्चित्त ---२२४
६५-६६. विस्मित करने का प्रायश्चित्त--२२५
६७-६८. अपनी सही अवस्था से विपरीत कहने, दिखाने का प्रायश्चित्त ---------------------------------२२६
६९. अतिशयोक्तियुक्त प्रशंसा करने का प्रायश्चित --२२६
७०. विरुद्ध राज्यों की विरोधावस्था में बारंबार जाने का प्रायश्चित-------------------------------------२२८
७१-७२. दिवस भोजन की निन्दा एवं रात्रिभोजन की प्रशंसा करने का प्रायश्चित -------------------२२८
७३-७६. रात्रिभोजन करने का चौभंगीयुक्त प्रायश्चित्त---२२९
७७-७८. रात्रि में आहार रखने एवं वासी खाने का प्रायश्चित्त---२३१
७९. विशिष्ट आहारार्थ अन्यत्र रात्रि में रहने का प्रायश्चित्त---२३३
८०. नैवेद्यपिंड खाने का प्रायश्चित्त--२३४
८१-८२. यथाछंद (स्वछंद साधु) की वंदना प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त---------------------------------२३५
८३-८४. अयोग्य को दीक्षा या बडी दीक्षा देने का प्रायश्चित --२३६
८५. असमर्थ से सेवा कराने का प्रायश्चित्त---२३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६-८९. साधु-साध्वियों के एक स्थान पर ठहरने का प्रायश्चित -- २४०
९०. रात्रि में बासी रखे संयोज्य पदार्थ खाने का प्रायश्चित -- २४१
९१. बालमरण (आत्मघात) की प्रशंसा करने का प्रायश्चित -- २४२
उद्देशक का सूत्रक्रम युक्त सारांश-- २४४
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है या नहीं है-- २४५
उद्देशक १२
१-२. त्रस प्राणियों के बन्धन विमोचन का प्रायश्चित-- २४७
प्रत्याख्यानभंग करने का प्रायश्चित-- २४९
४. सचित्त नमक पानी आदि से संयुक्त आहार खाने का प्रायश्चित-- २५०
५. सरोमचर्म के उपयोग करने का प्रायश्चित-- २५१
६. वस्त्राच्छादित पीढे पर बैठने का प्रायश्चित -- २५५
७. निर्ग्रन्थी की चद्दर सिलवाने का प्रायश्चित -- २५५
८. पांच स्थावरकाय की विराधना का प्रायश्चित -- २५६
९. वृक्ष पर चढने का प्रायश्चित-- २६१
१०. गृहस्थ के बर्तनों में आहार करने का प्रायश्चित -- २६२
११. गृहस्थ के वस्त्र उपयोग में लेने का प्रायश्चित -- २६३
१२. गृहस्थ के शय्या आसन को उपयोग में लेने का प्रायश्चित -- २६४
१३. गृहस्थ की चिकित्सा करने का प्रायश्चित -- २६४
१४. पूर्वकर्म दोषयुक्त आहार लेने का प्रायश्चित -- २६५
१५. सचित्त जल में उपयुक्त बर्तन या हाथ आदि से आहार लेने का प्रायश्चित-- २६६
१६-३१. रूप की आसक्ति से विभिन्न स्थल देखने जाने का प्रायश्चित -- २६७
३२. प्रथम प्रहर के आहार की मर्यादा उल्लंघन का प्रायश्चित-- २७६
३३. दो कोस से आगे आहार ले जाने का प्रायश्चित-- २७८
३४-४१. रात्रि में विलेपन करने का प्रायश्चित-- २७९
४२-४३. गृहस्थ से उपधि वहन कराने का प्रायश्चित-- २८१
४४. महानदी पार करने का प्रायश्चित-- २८२
उद्देशक का सूत्रक्रमांकयुक्त सारांश -- २८३
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है अथवा नहीं है-- २८४
उद्देशक १३
१-८. सचित्त पृथ्वी आदि पर खडे रहने आदि का प्रायश्चित -- २८६
९-११. अनावृत ऊंचे स्थानों पर खडे रहने आदि का प्रायश्चित-- २८७
१२. गृहस्थ को शिल्पकला आदि सिखाने का प्रायश्चित -- २८९
१३-१६. गृहस्थ की कठोर शब्द आदि से आशातना करने का प्रायश्चित -- २८९
१७-२७. कौतुककर्म आदि के प्रायश्चित -- २९१
२८. मार्गादि बताने का प्रायश्चित-- २९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९-३०. धातु एवं धन बताने का प्रायश्चित--२९४
३१-४१. पात्र आदि में प्रतिबिम्ब देखने का प्रायश्चित---२९४
४२-४५. वमन आदि औषध प्रयोग करने का प्रायश्चित---२९६
४६-६३. पार्श्वस्थ आदि की वंदना प्रसंशा करने का प्रायश्चित--२९७
६४-७८. उत्पादना के दोषों का प्रायश्चित ---३०५
उद्देशक का सूत्रक्रमांक सारांश ---३०७
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है या नहीं है---३०८
उद्देशक १४
१-४. क्रीत आदि छह उद्गमदोषयुक्त पात्र लेने का प्रायश्चित--३१०
अतिरिक्त पात्र गुरु आदि की आज्ञा बिना देने लेने का प्रायश्चित ------------------------------------३१३
६-७. अतिरिक्त पात्र देने, न देने का प्रायश्चित---३१४
८-९. अयोग्य पात्र रखने का एवं योग्य पात्र परठने का प्रायश्चित-----------------------------------३१६
१०-११. पात्र को सुन्दर या खराब करने का प्रायश्चित --३१६
१२-१९. पात्रपरिकर्म करने का प्रायश्चित --३१७
२०-३०. अकल्पनीय स्थानों में पात्र सुखाने का प्रायश्चित--३१९
३१-३६. त्रसप्राणी, जाले आदि निकाल कर पात्र लेने का प्रायश्चित-----------------------------------३२१
३७. पात्र में कोरणी (चित्र) करने का प्रायश्चित ---३२३
३८. मार्ग आदि में पात्र की याचना करने का प्रायश्चित ---३२३
३९. परिषद में से उठाकर पात्र की याचना करने का प्रायश्चित------------------------------------३२४
४०-४१. पात्र के लिए निवास करने का प्रायश्चित--३२४
उद्देशक का सूत्रक्रमांकयुक्त सारांश ---३२५
किन-किन सूत्रों के विषय का वर्णन आगमों में है या नहीं है--३२६
उद्देशक १५
१-४. सामान्य साधु की आशातना करने का प्रायश्चित---३२७
५-१२. सचित्त आम्र खाने-चूसने सम्बन्धी प्रायश्चित ---३२७
१३-६६. गृहस्थ से शरीरपरिकर्म कराने का प्रायश्चित--३२९
६७-७५. अकल्पनीय स्थानों में परठने का प्रायश्चित--३३०
७६. गृहस्थ को आहार देने का प्रायश्चित---३३२
७७-८६. पार्श्वस्थ आदि के साथ आहार लेन-देन का प्रायश्चित---३३३
८७. गृहस्थ को वस्त्रादि देने का प्रायश्चित--३३५
८८-९७. पार्श्वस्थ आदि से वस्त्रादि के लेन-देन करने का प्रायश्चित------------------------------------३३५
९८. गवेषणा किए बिना वस्त्र-ग्रहण करने का प्रायश्चित ---३३७
९९-१५२. विभूषा के लिए उपकरण रखने एवं धोने का प्रायश्चित------------------------------------३३८
१५३-१५४. विभूषा के लिए उपकरण रखने एवं धोने का प्रायश्चित----------------------------------३३८
उद्देशक का सूत्रक्रमांक युक्त सारांश--३४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किन-किन सूत्रों के विषय का कथन अन्य आगमों में है या नहीं------------------------------------३४१
उद्देशक १६
१-३. निषिद्ध शय्या में ठहरने का प्रायश्चित्त--३४२
४-११. इक्षु खाने चूसने सम्बन्धी प्रायश्चित्त---३४४
१२. जंगलवासी एवं जंगल में भ्रमणशील व्यक्तियों का आहार लेने का प्रायश्चित्त------------------३४५
१३-१४. शुद्धाचारी और शिथिलाचारी के अयथार्थ कथन का प्रायश्चित्त ---------------------------------३४६
१५. शुद्धाचारी गण से शिथिलाचारी गण में जाने का प्रायश्चित्त--३४७
१६-२४. कदाग्रही के साथ लेन-देन करने का प्रायश्चित्त--३४८
२५-२६. अनार्यक्षेत्र एवं लम्बे मार्गों में विहार करने का प्रायश्चित्त--३५०
२७-३२. जुगुप्सित कुलों से सम्बन्धित प्रायश्चित्त ---३५१
३३-३५. आहार रखने के स्थान सम्बन्धी प्रायश्चित्त--३५२
३६-३७. गृहस्थ के सामने बैठकर आहार करने का प्रायश्चित्त--३५४
३८. आचार्य उपाध्याय की सम्यक् आराधना न करने का प्रायश्चित्त --------------------------------------३५५
३९. मर्यादा से अधिक उपकरण रखने का प्रायश्चित्त --३५६
४०-५०. विराधना वाले स्थानों में मल-मूत्र परठने का प्रायश्चित्त --३६८
उद्देशक का सूत्रक्रमांक युक्त सारांश---३६९
किन-किन सूत्रों के विषय का वर्णन अन्य आगमों में है या नहीं है--३७०
उद्देशक १७
१-१४. कुतूहल की अनेक प्रवृत्तियों का प्रायश्चित्त--३७२
१५-१२२. श्रमण-श्रमणी का परस्पर गृहस्थ द्वारा शरीरपरिकर्म करवाने का प्रायश्चित्त--------------३७५
१२३-१२४. सदृश निर्ग्रन्थ निर्ग्रंथी को स्थान न देने का प्रायश्चित्त---३७६
१२५-१२७. मालोपहृत और मट्टिओपलित्त दोष का प्रायश्चित्त --३७६
१२८-१३१. सचित्त पृथ्वी, पानी आदि पर से आहार लेने का प्रायश्चित्त-------------------------------------३७८
१३२. वायुकाय की विराधना से आहार लेने का प्रायश्चित्त ---३८०
१३३. तत्काल धोये धोवण लेने का प्रायश्चित्त --३८१
१३४. स्वयं को आचार्य लक्षणों से युक्त होने का प्रचार करने का प्रायश्चित्त ------------------------------३८६
१३५. गायन आदि करने का प्रायश्चित्त--३८७
१३६-१५५. विभिन्न शब्द श्रवणार्थ गमन एवं आसक्ति का प्रायश्चित्त ---३८८
उद्देशक का सूत्रक्रमांकयुक्त सारांश ---३९०
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है या नहीं है--३९०
उद्देशक १८
१-३२. नौकाविहार सम्बन्धी प्रायश्चित्त--३९२
३३-७३. वस्त्र सन्बन्धी विभिन्न प्रायश्चित्त --३९९
उद्देशक का सूत्रक्रमांकयुक्त सारांश ---४००
किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है या नहीं है--४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्देशक १९

१-७. औषध सम्बन्धी क्रीतादि दोषों का प्रायश्चित्त--४०२

८. चार संध्याकाल में स्वाध्याय करने का प्रायश्चित्त--४०५

९-१०. उत्काल में कालिकश्रुत के उच्चारण का प्रायश्चित्त--४०७

११-१२. महा-महोत्सवों में स्वाध्याय करने का प्रायश्चित्त--४१०

१३. स्वाध्यायकाल में स्वाध्याय नहीं करने का प्रायश्चित्त---४१२

१४. अस्वाध्याय के समय स्वाध्याय करने का प्रायश्चित्त--४१४

१५. स्वशरीर सम्बन्धी अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने का प्रायश्चित्त-------------------------------४१८

१६-१७. विपरीत क्रम से आगमों की वाचना देने का प्रायश्चित्त ------------------------------------४१९

१८-२१. अयोग्य को वाचना देने और योग्य को वाचना न देने का प्रायश्चित्त ----------------------४२२

२२. वाचना देने में पक्षपात करने का प्रायश्चित्त---४२५

२३. अदत्त वाचना ग्रहण करने का प्रायश्चित्त--४२५

२४-२५. गृहस्थ के साथ वाचना के आदार-प्रदान करने का प्रायश्चित्त---------------------------------४२६

२६-३५. पार्श्वस्थ आदि के साथ वाचना के आदान-प्रदान का प्रायश्चित्त-------------------------------४२७

उद्देशक का सूत्रक्रमांक युक्त सारांश---४२९

उपसंहार-उद्देशक की विशेषता

किन-किन सूत्रों का विषय अन्य आगमों में है या नहीं है---४२९

उद्देशक २०

१-१४. सकपट निष्कपट आलोचक के प्रायश्चित्त --४३१

१५-१८. प्रायश्चित्त की प्रस्थापना में पुनः प्रतिसेवना के आरोपण---------------------------------------४४०

१९-२४. दो मस के प्रायश्चित्त की स्थापित आरोपणा ---४४५

२५-२९. दो मास प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता, आरोपणा एवं क्रमिकवृद्धि---------------------------------४४८

३०-३५. एक मास प्रायश्चित्त की स्थापित आरोपणा---४४९

३६-४४. एक मास प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता, आरोपणा एवं क्रमिकवृद्धि -------------------------------४५१

४५-५१. मासिक और दो मासिक प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता, आरोपणा एवं क्रमिकवृद्धि -------------४५३

उद्देशक का सूत्रक्रमांकयुक्त सारांश--४५५

उपसंहार--४५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org